Partnership
Unpaid carework
Hindi version PDF
Azad Foundation

Men For Gender Justice Program

Azad Foundation

साझेदारी....

अवैतनिक घरेलू एवं देखभाल के कार्य

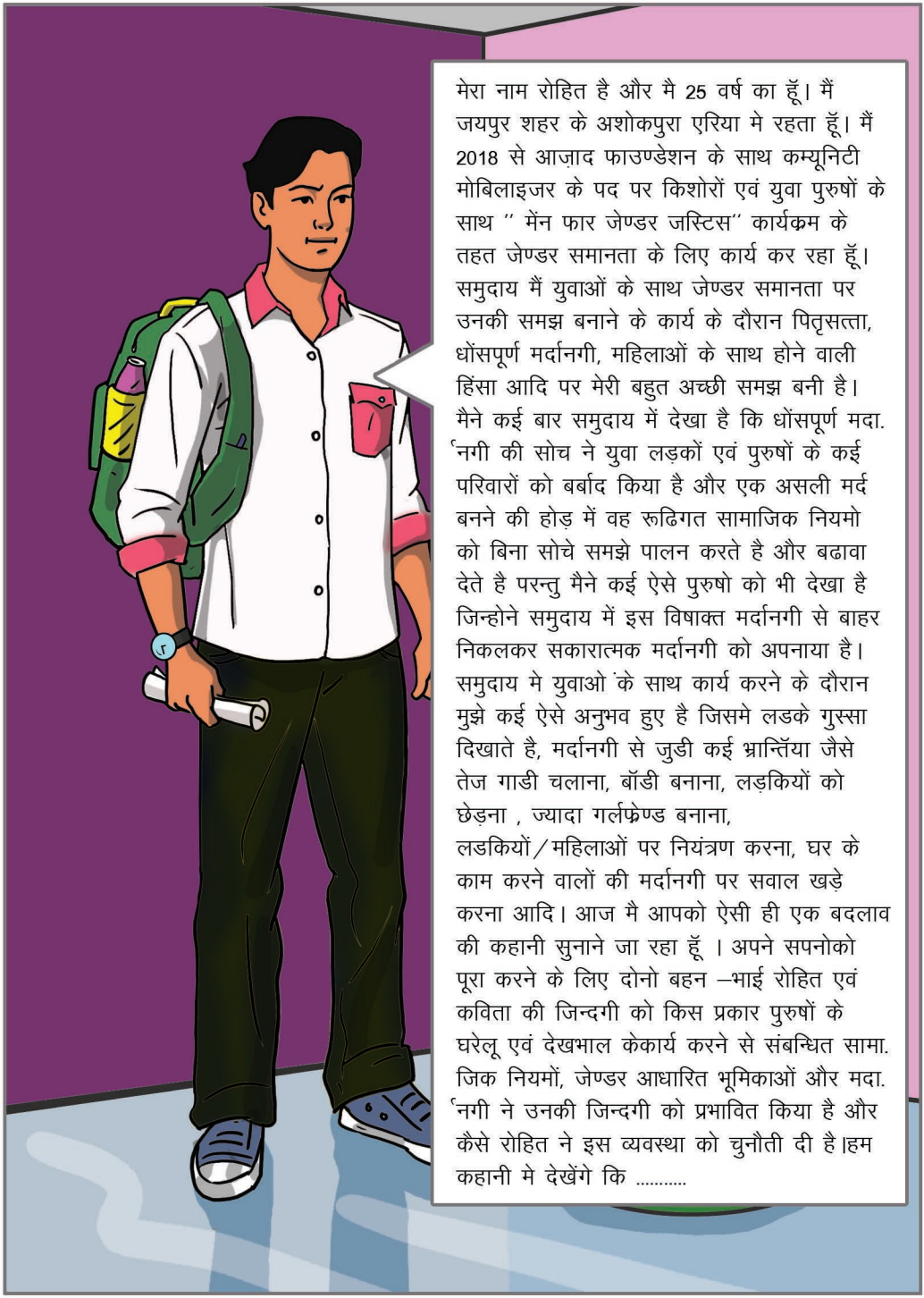
मेरा नाम रोहित है और मै 25 वर्ष का हूँ। मैं जयपुर शहर के अशोकपुरा एरिया मे रहता हूँ। मैं 2018 से आज़ाद फाउण्डेशन के साथ कम्यूनिटी मोबिलाइजर के पद पर किशोरों एवं युवा पुरुषों के साथ '' मेंन फार जेण्डर जस्टिस'' कार्यक्रम के तहत जेण्डर समानता के लिए कार्य कर रहा हूँ। समुदाय मैं युवाओं के साथ जेण्डर समानता पर उनकी समझ बनाने के कार्य के दौरान पितृसत्ता, धोंसपूर्ण मर्दानगी, महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा आदि पर मेरी बहुत अच्छी समझ बनी है। मैने कई बार समुदाय में देखा है कि धोंसपूर्ण मदा. ंनगी की सोच ने युवा लड़कों एवं पुरुषों के कई परिवारों को बर्बाद किया है और एक असली मर्द बनने की होड़ में वह रूढिगत सामाजिक नियमो को बिना सोचे समझे पालन करते है और बढावा देते है परन्तु मैने कई ऐसे पुरुषो को भी देखा है जिन्होने समुदाय में इस विषाक्त मर्दानगी से बाहर निकलकर सकारात्मक मर्दानगी को अपनाया है। समुदाय मे युवाओ ंके साथ कार्य करने के दौरान मुझे कई ऐसे अनुभव हुए है जिसमे लडके गुस्सा दिखाते है, मर्दानगी से जुडी कई भ्रान्तिंया जैसे तेज गाडी चलाना, बॉडी बनाना, लड़कियों को छेड़ना , ज्यादा गर्लफ्रेण्ड बनाना, लडकियों/महिलाओं पर नियंत्रण करना, घर के काम करने वालों की मर्दानगी पर सवाल खड़े करना आदि। आज मै आपको ऐसी ही एक बदलाव की कहानी सुनाने जा रहा हूँ । अपने सपनोको पूरा करने के लिए दोनो बहन –भाई रोहित एवं कविता की जिन्दगी को किस प्रकार पुरुषों के घरेलू एवं देखभाल केकार्य करने से संबन्धित सामा. जिक नियमों, जेण्डर आधारित भूमिकाओं और मदा. ंनगी ने उनकी जिन्दगी को प्रभावित किया है और कैसे रोहित ने इस व्यवस्था को चुनौती दी है।हम कहानी मे देखेंगे कि .....

मॉ

पिताजी

कविता

रोहित

श्रेया

मीरा

राहुल

अमित

आज मै आपको रोहित एवं कविता की कहानी सुनाने जा रहा हूँ । दोनो के अपनी अपनी जिन्दगी के कुछ सपने है। रोहित क्रिकेटर बनना चाहता है और कविता अन्तरिक्ष यात्री। कविता की मॉ बीमार रहती है तो लडकी होने के नाते, भाई एवं पिताजी की देखभाल एवं घर के सारे काम कविता को करना पड़ता है जिससे वह अपनी पढ़ाई को पर्याप्त समय नहीं दे पाती है ।

कविता को समझ नही आता कि वह क्या करे, उसके कई दोस्तों ने भी उसको सलाह दी। आगे हम कहानी में देखते है कि क्या होता है।

कविता के जन्म होने के बाद से उसकी मॉ ने अपने परिवार की देखभाल के लिए अपनी जॉब छोड़ दी थी। कुछ दिनों से वह बीमार है जिससे कमजोरी महसूस होती है और वह घर का काम नही कर पाती है। इसलिए घर का सारा काम कविता को ही करना पड रहा है

कविता अपने छोटे भाई एवं पिताजी के लिए पकोड़े बना रही है।

रोहित एवं उसके पिताजी *IPL* मैच देख रहे है।

दीदी इतना समय क्यों लग रहा है ?

रुका! पकौडे बनाने में समय लगता है।

दीदी, टेबल पर प्लेट रखो और सामने से हट जाओ।

मुझे यकीन है कि तुम से कोई शादी नही करेगा अगर वह यह पकोडा खा ले तो ।

कविता के पापा एक पकोडा चखने के बाद कहते है कि....

वह दोनो इस बात पर जोर से ठहाके मारते है। कविता इस पर कोई जवाब नही देती है।

यह कोई पहली बार नही था जो कविता ने अपने बारे में ऐसा सुना

कविता गुस्से में बर्तन साफ कर रही है
स्कूल जाने के लिए जल्दबाजी में वह बैग तैयार कर रही है और
भाग दौड़ कर स्कूल पहुचती है
इस सप्ताह मे यह तीसरी बार है जब तुम देरी से आयी हो।
क्या में अन्दर आ सकती हूँ ?
क्या बात है कविता ? लगता है अब तुम्हारा पढ़ाई में मन नही लग रहा है ?
मैडम ऐसा नही है। मेरी माँ बीमार रहती है और स्कूल आने से पहले घर का सारा काम मुझे ही करना पड़ता है।
अगर ऐसा ही चलता रहा तो तुम्हारी सारी मेहनत बेकार चली जायेगी । प्लीज अपने माता पिता से बात करो कि तुम्हे पढ़ाई करने का समय दे।
टीचर की बातो ने कविता को और चिंता में डाल दिया। माँ के बीमार होने से पहले उसको पढ़ने के लिए समय मिल जाता था परन्तु अभी घर के काम के बोझ की वजह से उसको समय ही नहीं मिल पाता।

कविता की मॉ अभी पहले से बेहतर महसूस कर रही है और अभी वह कविता को घर के काम मे मदद करने मे समर्थ है।

रोहित अपने कमरे में पढ़ाई कर रहा है।

MASTER BLASTER

उसके पिताजी न्यूज देख रहे है।

मम्मी मुझे पढ़ाई करने के लिए जाना है। अगले सप्ताह से मेरे एक्जाम है और मुझे पढ़ाई के लिए बिल्कुल भी समय नही मिलता है।
तुम्है दिखता नही है अभी कितना काम पडा हुआ है। तुम्है क्या लगता है मेरे लिए आसान है यह सब काम करना और वैसे भी शादी के बाद तो तुम्है यह सब करना ही है ।
बहुत हो गया...दिन भर यही सुनती रहती हूँ। अगर तुम्है काम मे मदद ही चाहिये तो तुम रोहित और पापा से क्यों नही बोलती हो । मेरा आधा दिन तो उनके काम करने मे ही निकल जाता है। कम से कम रोहित बर्तन साफ कर दे, सब्जी का टदे तो इससे आपको भी आराम करने का समय मिलेगा और मुझे भी पढ़ाई करने का ।
तुम्हारा दिमाग तो सही है ना। तुमने आज तक किसी मर्द को घर के काम करते देखा है ?
तुम क्या चाहती हो रोहित को औरतों के यह काम करते देख उसके दोस्त उसको छेडे यह पागलपन की बाते छोड़ो और मुझे काम में मदद करो।
कविता बहुत परेशान है क्योकि कोई उसकी तकलीफ को नही समझ रहा जबकि वह अपनी माँ की तकलीफ को समझ सकती है लेकिन वह रोहित और पापा को घर के काम में मदद के लिए नही पूछ सकती ।

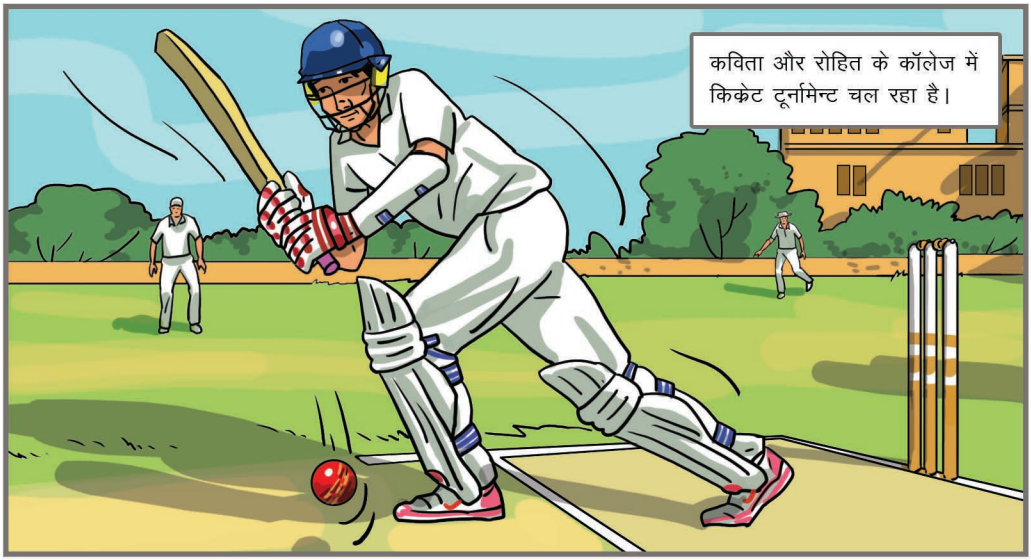
कविता और रोहित के कॉलेज में किकेट टूर्नामेन्ट चल रहा है।

रोहित बैटिंग कर रहा है और उसके दोस्त उसको चीयर्स कर रहे है। कविता भी अपनी दोस्त श्रेया के साथ मैच देखते हुए कुछ बातचीत कर रही है।
तुम्हे अपने भाई पर गर्व करना चाहिये। वह पढाई में भी अच्छा है और किकेट भी अच्छा खेलता है।

जब घर मे किसी को सभी का सहयोग मिलता है तो जिन्दगी में आगे बढना आसान हो जाता है।

क्या बात है कविता। तुम बड़ी परेशान लग रही हो।
कविता कुछ सोचने लग जाती है। वह अपने भाई के लिए खुश है परन्तु वह परेशान भी है की घर में कोई उसको काम में मदद नही कर रहा है।

पिछले कई महीनो से मै पढ़ाई नही कर पा रही हूँ । जब भी पढने बैठती हूँ तो कोई ना कोई काम के लिए आवाज लगा देता है और अब तो शादी के लिए भी कहने लगे है।
अरे मेरे साथ भी ऐसा ही हो रहा था। मै थक गयी थी समझाते समझाते । मेरे और मम्मी के बीच मे हर दिन झगड़े होते थे इन सब बातो को लेकर ।

यही ! फिर तुमने क्या किया?

मैंने घर मे सब से बात की और मैंने काम करने से साफ मना कर दिया कि मुझे पढना है। मैंने अपने भाई से मम्मी की मदद करने के लिए बोला।
क्या तुम्हारा भाई तुम्हारी मदद के लिए मान गया ?

शुरूआत में तो वह नही माना परन्तु बाद में बातचीत और समझाने से मान गया। मैने उसको समझाया कि घर का काम सबका काम होता है इसे चाहे औरत करे या मर्द। यह काम करने से लड़कों की मर्दानगी खत्म नही हो जायेगी बल्कि एक दूसरे की मदद करने से रिश्ते और मजबूत बनते है।
मुझे नही लगता कि मेरा भाई इसको समझ पायेगा।

हम केवल उम्मी दरख सकते एवं कोशिश ही कर सकते है। अगर वह नही समझता है तो तुम्हे अपने लिए आवाज उठानी ही पड़ेगी। तुम इसके लिए तैयार रहो।
तुम्हारी बातों से थोडा हौसला मिला है । आज मै जरुर अपने भाई से बात करुँगी।

कविता अपने घर पहुँचती है।

हमेशा की तरह उसका भाई अपने कमरे में टीवी देख रहा है। कविता की मॉ खाना बना रही है ।

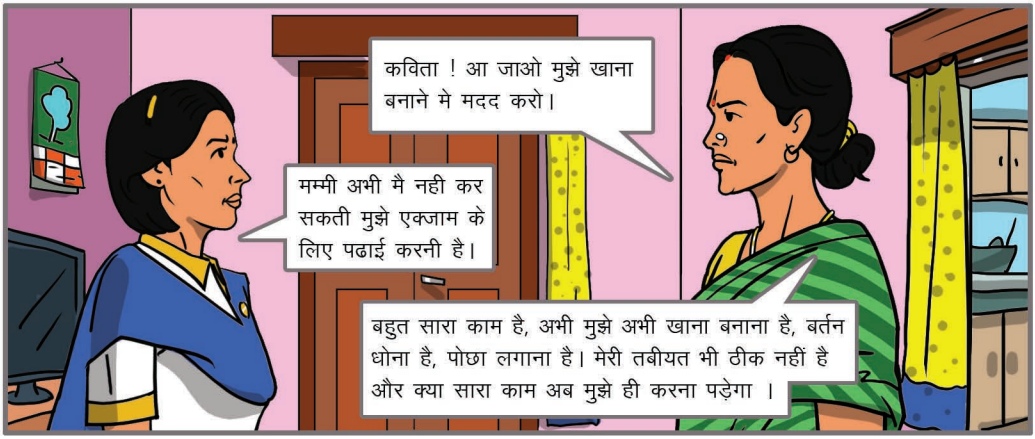
कविता ! आ जाओ मुझे खाना बनाने मे मदद करो।
मम्मी अभी मै नही कर सकती मुझे एक्जाम के लिए पढाई करनी है।
बहुत सारा काम है, अभी मुझे अभी खाना बनाना है, बर्तन धोना है, पोछा लगाना है। मेरी तबीयत भी ठीक नहीं है और क्या सारा काम अब मुझे ही करना पड़ेगा ।

मम्मी को रसोई मे मदद करवाने के लिए कविता रोहित को बुलाने जाती है।

रोहित

रोहित तुम मेरी और मम्मी की काम में कभी मदद क्यो नही करते हो। तुम्हे थोड़ा सा भी अंदाजा है मम्मी की तबीयत कितनी खराब है ,कैसे वह काम करती है ?
दीदी ,मुझे थोड़ी देर में मैच के लिए निकलना है और अभी तक मैने खाना भी नही खाया है। मुझे बहुत तेज भूख लग रही है जल्दी से जाओ और कुछ लाकर दो।
और क्या हो गया आपको आजकल ? हमेशा आप मेरे यह घरेलू काम करने के पीछे पड़ी रहती हो। यह मेरा काम थोड़े ही है ?

तुम क्या चाहते हो मै पढ़ाई नही करु ? तुम्हारी बहन केवल घर के काम करने से फेल हो जाये ? मम्मी दिन भर काम करे जिससे वह और बीमार हो जाये ?

मै अपने बहन की थोड़ी सी भी मदद नही कर रहा हूँ जिससे वह पढ़ाई कर सके ,मम्मी भी बीमार है लेकिन घर का काम मै कैसे कर सकता हूँ। मेरे दोस्त क्या सोचेंगे जब उनको पता लगेगा ?

ठीक है आज से हम काम को बॅाट लेते है। मै मम्मी को बर्तन साफ करने एवं दिन का खाना बनाने मे मदद कर दूँगा और तुम रात का खाना बनाने में ।

धन्यवाद रोहित ।
ध्यान रखना जो तुमने कहा । मुझे बड़ा अच्छा लगा कि तुम मान गये।

अगर मेरे दोस्तों को पता लग गया कि मै घर का काम कर रहा हूँ तो मुझ पर हसेंगे सभी। मेरी तो कोई इज्जत ही नही रहेगी। सब मुझे नामर्द कह के चिढायेंगे।
रोहित जाता है और अपनी मम्मी को सब्जी काटने में मदद करने लगता है। दो–तीन दिन रोहित घर के काम में मदद करता है

"The path from dreams to success does exist.
May you have the vision to find it,
the courage to get onto it
and the perseverance to follow it."
Kalpana Chawla - 17th Mar, 1962- 1st Feb, 2003
कविता को अपनी पढ़ाई के लिए अब थोड़ा समय मिलने लगा। वह अपने कमरे मे पढ़ रही है।

रोहित अपने दोस्त राहुल और अमित के साथ क्रिकेट खेलने जाता है।
शायद घर जाने का टाइम हो गया है। दीदी पढ रही होगी ।
मुझे अब जाना पड़ेगा ।
अगर मे घर नही गया तो मम्मी फिर दीदी को काम में लगा देगी।
अमित रोहित पर हसॅने लगता है।
अरे क्या हो गया दोस्त तुम्हे ?
अरे आजकल यह लड़की बन गया है। घर के काम जो करने लग गया।
आज यह काम करने लगा है थोडे दिनो बाद हाथ में चूडियॅा पहन कर खेलेगा।
अरे भाई यह अपना काम नही है। हम मर्द है और मर्दो को केवल बाहर के काम करना ही शोभा देता है।
Ha.. Ha.. HaHa..
राहुल और अमित दोनो रोहित पर हॅसने लगते है।
रोहित गुस्से में घर आता है।
अरे रोहित तुम यह बर्तन साफ कर दो।
दीदी अब मै यह नही करने वाला। मै बाजार से कुछ सामान लाना हो वह कर सकता हूॅ परन्तु यह सब नही करुगॅा। मेरे दोस्त पहले ही मेरा मजाक बनाने लगे है ।
यह सुनकर कविता रोहित से थोड़ी नाराज हो जाती है कि वह उसकी स्थिति को नही समझ पा रहा है और रोहित को सुनाने लग जाती है

जब से मम्मी बीमॉर है तब से मै अपनी पढाई का नुकसान कर तुम्ह. ारा और पापा का ध्यान रख रहीहूँ। मुझे भी यह काम करने का कोई शौक नही है परन्त मुझे करना पडता है क्या कि घर का काम केवल लड़कियो और महिलाओ को ही करना है बस! मम्मी भी बाहर जाकर जॉब कर सकती थी परन्त दिन भर घर के काम से फुर्सत मिले तब जॉब करे। तुम्हार जैसे मर्दो को लगता है कि केवल औरतों की जिन्दगी काम कसदतोकेवल घर का काम और परिवार काही ध्यान रखना है। सोचो तुम्हे कै साल गेगा अगर तुम्हे क्रिकेट खेलने और पढ़ने का समय नही मिल तो। दिन भर काम करने के बादभी यही सुनने को मिलता है कि काम है ही क्या ! जब मैन तुम से काम मे मदद करने के लिए कहातो तुम्है तो अपनी मर्दानगी की चिंता लगी, अपने दोस्तो में मजाक बनाने का ड़र लगने लगा। शायद तुम्है लगता है कि मेरा तो कोई सपना ही नही है मै पढलिख कर क्या करुंगी। श्रेयाका भाई भी तो घर के काम मेमदद करता है उसकी मर्दानगी पर तो कोई असर नही पड़ा। रोहित घरका काम भी बाहर के काम की तरह ही होता है इसमे शर्म कि सबातकी। मुझे उम्मीद है तुममे री. बातको जरुर समझोगे।
कविता की बातों ने रोहित को सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि पुरुषों की भी घर के काम में भागीदारी होनी चाहिये।
रोहित रास्तें में अपने दोस्तो की बातों पर बिना ध्यान दिये अपने घर आ जाता है।
रोहित अपने घर पहुचता है और घर के काम में अपनी मॉ और बहन की मदद करने लगता है।
वह सब्जी काटने, बर्तन धोने और अपने कमरे को साफ करना शुरु किया।
उसने अपने दोस्तों को भी घर के काम में सहयोग करने के लिए प्रेरित करना शुरु कर दिया।
दीदी अब में आपकी मदद करुंगा तो आपको जरुर पढ़ने का समय मिल जायेगा। कुछ काम हो तो आप मुझे बता देना।
कविता अपने भाई में यह बदलाव देखकर खुश है।

कविता देखती है कि उसकी दोस्त मीरा थोड़ा परेशान दिख रही है और कुछ सोच रही है।

अरे मीरा ! क्याहुआ। क्या दिक्क्त है।

अरे वही सब घर की दिक्कते है। मै आगे बढना चाहती हूँ पर मेरे परिवार वालेमेरी शादी करना चाह रहे है और ससुराल मे घर का काम करना पड़ेगा इसलिए पढाई छुडाकर घर के काम की ट्रेनिंग मिलने लग गई और भैया भी बाकी घर वालों की तरह बर्ताव करता है।

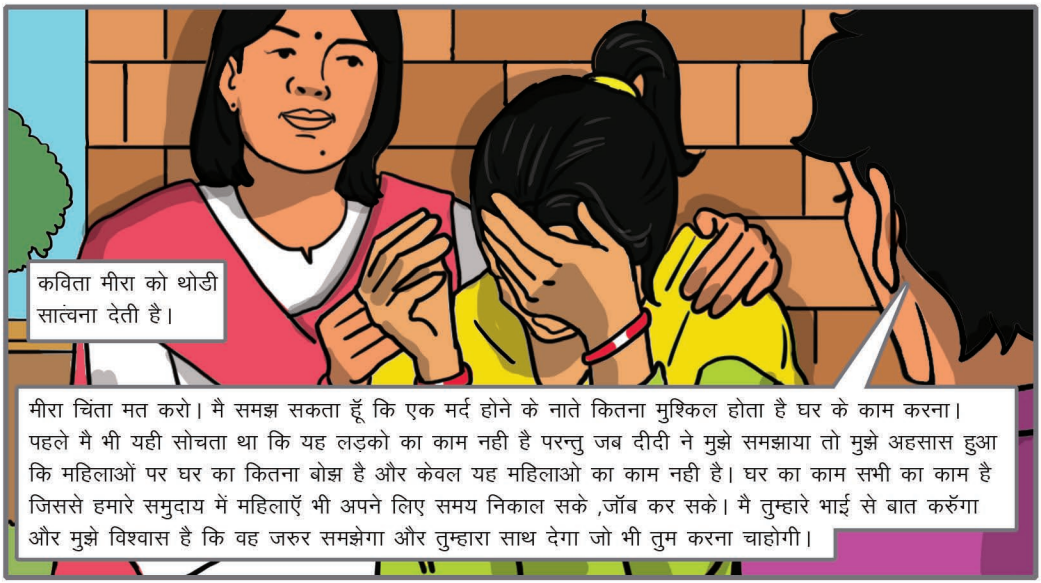
कविता मीरा को थोडी सात्वना देती है।
मीरा चिंता मत करो। मै समझ सकता हूँ कि एक मर्द होने के नाते कितना मुश्किल होता है घर के काम करना। पहले मै भी यही सोचता था कि यह लड़को का काम नही है परन्तु जब दीदी ने मुझे समझाया तो मुझे अहसास हुआ कि महिलाओं पर घर का कितना बोझ है और केवल यह महिलाओ का काम नही है। घर का काम सभी का काम है जिससे हमारे समुदाय में महिलाएँ भी अपने लिए समय निकाल सके ,जॉब कर सके। मै तुम्हारे भाई से बात करुँगा और मुझे विश्वास है कि वह जरुर समझेगा और तुम्हारा साथ देगा जो भी तुम करना चाहोगी।

सार नोट :

सबसे पहले हमें यह समझने की जरुरत है कि घरेलू कार्यो में क्या अवैतनिक घरेलूएवं देखभाल के का यंहै (*Unpaid carework*)। कोई भी ऐसे कार्य जो घर में बच्चों के पालन पोषण, किसी बीमार की भावनात्मक रुप से देखभाल ,घर की साफ सफाई रसोई से संबन्धित कार्य जैसे खाना बनाना, बर्तन धोना, आदि से संबन्धित है। हमारी सामाजिक व्यवस्था में घरेलू एवं देखभाल के कार्य केवल लड़कियों एवं महिलाओं की ही जिम्मेदारी समझा जाता है। परिवार में लड़कियों एवं महिलाओं से आशा की जाती है कि उन्हें हर दिन, हर समय परिवार के लोगों की जरुरतों को प्राथमिकता देना, उनका खयाल रखना केवल उनका काही कार्य है। घर में देखभाल एवं घरेलू कार्य की ना ही तो कोई खास पहचान मिलती है और ना कोई सम्मान।

सयुंक्त राष्ट्र संघ के अध्ययन मे सामने आया है कि महिलाओं द्वारा किये जाने वाले 51 प्रतिशत कार्यो का कोई मूल्य नही होता है। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (*ILO*) की 2018 की रिपोर्ट के आंकड़े दर्शाते है कि भारत में शहरी क्षेत्रों मे एक दिन में महिलाएँ 312 मिनट घरेलू कार्य में खर्च करती है जबकि वही पुरुष केवल 29 मिनट घरेलू कार्य करते है। यदि हम अपने घरों में देखें तो महिलाएं सुबह जल्दी उठती हैं और रात में घर के सारे काम निपटाकर सोती हैं ,महिलाओं को आराम के लिए मात्र 6 से 8 घंटे मिल पाते हैं। महिलाओं के ऊपर कामका ज्यादा बोझ होने के कारण उन्हें आगे बढ़ने, कुछ नया करने या सीखने का मौका नहीं मिल पाता है।

लड़के/पुरुष अगर घर के कार्य ,बच्चों को संभालने में मदद करना चाहे तो फिर उनको समाज, परिवार का डर सताने लगता कि लोग उनको असली मर्द नही होने का ताना मारेंगे कि मर्द घर का काम नही करते है उनका काम तो केवल कमा कर लाना है या फिर बाजार से खरीददारी करना है।

हम इस कहानी में देख सकते है कि रोहित को अपनी पढाई एवं किकेट के लिए पूरे परिवार का सहयोग मिल रहा है था परन्तु उसकी बहन को घर की सॉफ सफाई से लेकर रसोई का सारा काम करना पडता था और अपनी पढाई लिए बिल्कुल भी समय नही मिलता था। कविता को ही उसकी मॉ की देखभाल भी करनी होती थी । रोहित एवं उसके पिताजी बिल्कुल भी कविता को घर एवं देखभाल के कार्य में मदद नही करते थे। रोहित को बचपन से सिखाया गया कि लड़का होने के नाते घर का काम उसका काम नही है और घर एवं उसके सारे काम उसकी मॉ एवं बहन करती है और उसने तब तक घरेलू कार्य में सहयोग की नही सोची जब तक कविता ने उससे इस बारे में बात नही की। समाज द्वारा महिलाओं एवं पुरुषों की भूमिका ऍएवं कार्य तय कर रखे है पुरुषो को अधिकतर समाज में कमाई कर परिवार चलाने वाले एवं रक्षक के रुप में देखा जाता है साथ ही महिलाओं एक परिवार के पालन पोषण एवं देखभाल करने के रुप में देखा जाता है। साथ ही परिवार में भी बचपन से लड़कियों को सिखाया जाता कि घर का कार्य करने की जिम्मदारी केवल उनकी ही है। महिलाओं को भी इस सामाजिक व्यवस्था में सीखने का मिलता है कि यह लड़कों का कार्य नही है क्योकि जब कविता ने उसकी मॉ से रोहित को घर के कार्य करने के लिए पूछा तो उसने कविता को डॉटकर मना कर दिया की यह काम मर्दो का नही है। जैसा हमने कहानी में देखा कि रोहित उसकी बहन की स्थिति को देखकर घर के कार्यों मे सहयोग करने का निश्चय करता है परन्तु तब ही वह अपने दोस्तों के बारे में सोचनें लगता है कि वह क्या सोचेंगे ,वह उसको चिडायेंगे,उसकी मर्दानगी पर सवाल उठायेंगे।

हमारे समाज में मर्दानगी की कई सामाजिक धारणाएँ है कि एक असली मर्द होने का मतलब क्या है जो उनको रोबदार एवं धोसंपूर्ण मर्द बनने लिए प्रोत्साहित करती है और यह धारणाएँ मर्दो को परिवार के लोगो की देखभाल एवं घरेलू कार्यो में सहयोग करने से रोकती है। इसलिए पुरूषों को महिलाओं के कार्य बोझ को कम करने में मददगार बनना होगा क्योकि इससे परिवार में उनके रिश्ते ओर मजबूत होगें, महिलाएं भी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ सकेंगी। महिलाओं वल ड़कियों को जानकारी आधारित, तकनीक आधारित, कौशल आधारित तथा आर्थिक निर्णयों के कार्यो में शामिल किया जाये व पुरूष घर के कार्यो में अपनी भूमिका एंबनायें जिससे कि महिलाओं व लड़कियों को घर से बाहर जाने के मौके मिल सके।

लड़को एवं मर्दो को घर के कार्य में सहयोग करने से महिलाओं का भी अपनी पढाई या बाहर जाकर नौकरी करने का मौका मिल सकेगा जिससें परिवार में आर्थिक संम्पन्नता बढेगी एवं महिलॉए भी आर्थिक रुप से सशक्त होंगी और यह तब ही सम्भव हो पायेगा जब लड़के एवं पुरुष धोंसपूर्ण मर्दानगी के इस ढांचे को चुनौती देंगे एवं सकारात्मक मर्दानगी को अपनाकर घरेलू एवं देखभाल के कार्य के बोझ को कम कर महिलाओं को आय सर्जन के कार्यो में जोडने में साझेदार बनेगें।

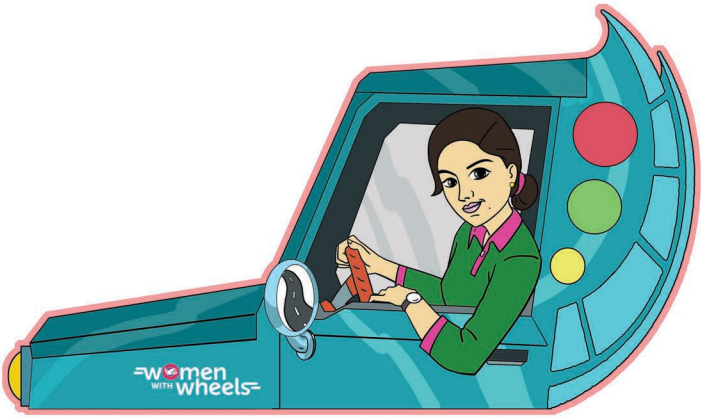

आज़ाद फाउण्डेशन के बारे में

आज़ाद फाउण्डेशन एक नारीवादी संस्था है जो सामाजिक और धार्मिक बटवारे के परे जाकर संसाधनविहीन महिलाओं को गैर परम्परागत रोजगार मे प्रशिक्षित कर उन्है सशक्त बनाने का कार्य करता है । आज़ाद पितृसत्ता की सीमाओ और ढांचो को तोड़ने के लिए प्रतिबद्व है ताकि महिलाये अपने जीवन पर नियंत्रण कर सके जिससे वह सम्मान के साथ अपना जीवनयापन कर सके। यह सब हम बदलावकारी क्षमतावर्धन कार्यक्रम के जरिये करते है जो गैर परम्परागत रोजगार की दक्षता व स्व–विकास की जरुरतों को संबोधितकरता है । हम समुदाय मेपुरुषो के साथ भी जेण्डर समानता के लिए काम करते है जिससे वह धोसपूर्ण मर्दानगी एवं पितृसत्ता की व्यवस्था को चुनौती दे जिससे समुदाय में महिलाओं के विकास के लिए सुरक्षित एवं सहयोगात्मक वातावरण का निर्माण हो।

जेण्डर समानता के लिए पुरुषों के साथ कार्य के बारे में

आज़ाद फाउण्डेशन का मानना है कि जेण्डर समानता के लिए पुरुषों के साथ कार्य करना महिलाओ के सशक्तिकरण का हिस्सा हैजिससे महिलाएँ गैर परम्परागत रोजगार में शामिल हो सके एवं सम्मान के साथ अपनी जिन्दगी के फैसले लेने का नियंत्रण स्वंय के पास हो ।
आज़ाद फाउण्डेशन 14–20 वर्ष के युवाओं के समुदाय में समूह बनाकर, सामाजिक अभियानों मे भागीदारी, स्पोर्टस, नुक्कड नाटक आदि के माध्यम से उनके साथ कार्य करतें है। समूह में कुछ सदस्यों का चयन कर उनमें नेतृत्व क्षमता का भी विकास किया जाता है जिससे वह अपने समूह के सदस्यो के सहयोग से समुदाय,परिवार मे जेण्डर आधारित हिंसा ,भेदभाव आदि का विरोध कर सके।
''मेन फॉर जेन्डर जस्टिस '' कार्यक्रम के तहत युवा लडकों एवं पुरुषों की पितृसत्ता, जेण्डर के आधार पर होने वाली हिंसा,घर के कार्यो में हिस्सेदारी, धोंसपूर्ण मर्दानगी आदि पर उनकी समझ बनाने का कार्य करते है जिससे वह जेण्डर समानता के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन कर जिन्दगी में रूढिवादी सामाजिक नियमों को चुनौती दे सके और साथ ही समुदाय में महिलाओं को गैर परम्परागत रोजगार से जुडने में सकारात्मक वातावरण बनाये जिससे वह सम्मान के साथ जीवनयापन कर सके।
पुरुषों एवं युवाओ द्वारा घर के कार्यो में भागीदारी से महिलाओं को घर से बाहर जाकर आय सर्जन के कार्यकरने ,शिक्षा एवं कुछ नया सीखने के अवसर एवंमाहौल मिलेगा।

जेण्ड़र समानता के लिए मेरे वादे/कदम याएक्शन

यक्तिगत एवं पारिवारिक स्तर पर :

1. .....

2. .....

3. .....

समुदायिक स्तर पर :

1. .....

2. .....

3. .....

लेखक

''मेनं फॉर जेण्डर जस्टिस टीम, आज़ाद फाउण्डेशन
R-10 ए, फ्लेट नम्बर 7, 2nd फ्लोर, नेहरु एन्कलेव,
कालकाजी, नई दिल्ली, 110019

ग्राफिक आर्टिस्ट

सुमन्त्रा मुखर्जी

सहयोग

EMpower – The Emerging markets foundation

Azad Foundation EMpower